मीडिया समन्वय कार्यालय

जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति 24 मार्च 2017

मौखिक भाषा को बचाए रखने की ज़रूरत

जामिया मिल्लिया इस्लामिया :जेएमआईः में आज प्राचीन समय से अब तक दुनिया के कुछ हिस्सों में चली आ रही '' मौखिक परंपरा '' :ओरल ट्रेडिशनः पर एक रोचक सेमिनार हुआ जिसमें विशेषज्ञों ने मौखिक अभिव्यक्ति को इंसान की एक महान विरासत बताते हुए उसके संरक्षण पर ज़ोर दिया।

जेएमआई के सेंटर फॉर नार्थ ईस्ट स्टडीज़ एंड पालिसी रिसर्च :एनईएसपीआरः की ओर से आयोजित इस राष्ट्रीय सम्मेलन में दिल्ली विश्वविद्यालय के 'मानव शास्त्र' विभाग के प्रो विनय कुमार श्रीवास्तव ने अपने मुख्य भाषण में कहा कि विश्व भर की कई जातियों की तरह हमारे देश में भी बड़ी संख्या में ऐसी आदिवासी जातियां हैं जिनकी केवल मौखिक भाषा है उनकी लिपी में अभिव्यक्ति नहीं है।

उन्होंने कहा कि हर मौखिक भाषा किसी ख़ास संस्कृति और आदिम जाति की महान विरासत है जिसे संजोए रखना चाहिए और उसका सम्मान होना चाहिए।

कुमार ने कहा, '' लिखित भाषा के उदय के बाद भी मौखिक भाषा की सर्वोच्चता है। और यह बात इस उदाहरण से साबित हो जाती है कि अच्छा

अध्यापक वही कहलाता है जो बेहतर मौखिक बातचीत से अपने छात्रों से अच्छा संवाद बना सके।

उन्होंने कहा कि कुरान, वेद, उपनिषद् सहित अधिकतर प्राचीन धर्म ग्रंथ मौखिक रूप से ही कई पीढ़ियों को हस्तांनतरित होते रहे हैं।

मौखिक परंपरा को बहुत पवित्र बताते हुए उन्होंने कहा कि यही वह चीज़ है जिसने इंसान को अपने सबसे करीबी चिम्पैंज़ी से अलग कर उसे ''वम मानुष से मानुष '' बना दिया।

एनईएसपीआर की डायरेक्टर सिमी मल्होत्रा ने '' ओरल ट्रेडिशन ऑफ द नगाज़ एंड टैन्जबल हेरिटेज '' विषय पर इस सम्मेलन के अपने प्रारंभिक संबोधन में कहा कि मौखिक संवाद का चलन प्रारंभ से रहा है और बहुत बाद में लिखित भाषा विकसित होकर प्रचलन में आई। उन्होंने कहा, हालांकि दुनिया में अभी भी बहुत सारे कबीले ऐसे हैं जिनकी मौखिक भाषा बनी हुई और उसे बचाए रखने के हर प्रयास होने चाहिए।

सम्मेलन में बड़ी संख्या में पूर्वोत्तर के छात्र, अध्यापक , भाषाविद और जीवन के अन्य क्षेंत्रों के लोग उपस्थित थे।

साईमा सईद

डिप्टी मीडिया कोऑर्डनैटर

font: Kruti Dev 010